

## श्री भीमाकाली मन्दिर, सराहन, रामपुर

पश्चिमी हिमालय के दामन में शिमला जिला के रामपुर बुशहर में भूमध्य रेखा से 3127' उत्तरी अक्षांश तथा 77°38' पूर्वी रेखांश के मध्य पुरातात्विक वैभव का पर्याय भीमाकाली मन्दिर सराहन समुद्रतल से 2150 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। सराहन को पूर्वी दिशा में श्री खण्ड महादेव की बर्फ से ढकी पर्वत श्रृंखलाएं भीमाकाली मन्दिर की शोभा को चार चांद लगा देती है। पहाड़ी शैली में निर्मित यह मन्दिर परिसर स्थापत्य शिल्प की बेजोड़ मिसाल है। किलानुमा शिल्प के मूल

से निःसृत आयताकार देवालयों की दीवारों पर की गई काष्ठ नक्काशी तथा मन्दिरों के शिखर पर पहाड़ी शैली में ओढ़े गए ढलानदार गुम्बद (प्रकोटे) वास्तु सौन्दर्य की छटा चारों ओर बिखेर देते हैं। इन मन्दिरों के द्वार (प्रौल) चांदी से और प्रांगण के प्रवेश द्वार दोनों ओर से पीतवर्ण धातु पीतल के साथ मढ़े गए हैं। यहां मन्दिर में काष्ठ कला और धातु शिल्प का अनूठा समन्वय देखने को मिलता है।

पौराणिक आख्यानों में वर्णित शोणितपुर वर्तमान में सराहन के नाम से जाना जाता है। किंवदन्ति है कि शोणितपुर राजाबलि के सौ पुत्रों में ज्येष्ठ पुत्र बाणासुर की राजधानी रही है। शिव के अनन्य भक्त बाणासुर की पुत्री उषा को स्वप्न में दिव्य राजकुमार के दर्शन हुए। नव यौवना उषा, राजकुमार को पाने की उत्कट इच्छा, योग विद्या में निपुण सखी चित्रलेखा से बताती है। चित्रलेखा योगमाया के बल से उस रहस्यमयी राजकुमार की पहचान श्री कृष्ण पौत्र अनिरुद्ध के रूप में करवाती है। इस पर उषा-अनिरुद्ध का गंधर्व विवाह होता है। उषा-अनिरुद्ध को एक साथ देखकर बाणासुर, अनिरुद्ध को बन्दी बना लेता है।

देवर्षि नारद से पौत्र के संकट में होने की सूचना सुनकर श्रीकृष्ण शोणितपुर पहुंचे। उपा-अनिरुद्ध विवाह सन्धि न होने पर श्रीकृष्ण और बाणासुर के मध्य तुमुल युद्ध हुआ। जिसमें बाणासुर को हार हुई। शोणितपुर की राजधानी श्रीकृष्ण ने अपने परम्परा से माना जाता है।

प्रौपोत्र प्रद्युमन को सौंपी। बुशहर रियासत के राजवंश का प्रादुर्भाव भी इसी वंश भीमाकाली बुशहर राजवंश की कुलीष्ट देवी है। भीमा का गूर देव खेल के आवेश में बुशहर रियासत के संस्थापक राजा को 'डौमन्यान' अर्थात् प्रद्युमन कह कर सम्बोधित करती है। सराहन में भीमाकाली के दो पौराणिक रूपों की पूजा का प्रचलन है। यहां आद्य शक्ति कन्या रूप में पूजित है जबकि भगवती सती की पूजा पार्वती के रूप में की जाती है। भीमाकाली की स्थापना के मूल में भीमगिरि साधु का उल्लेख भी मिलता है। नाना नाम रूपों के संसर्ग से उद्दीप्त जगज्जननी ने इस हिमालयायी जनपद में भीमकाय धारण कर असुरों का संहार किया जिससे लोक में यह देवी भीमाकाली के नाम से विख्यात हुई।

यहां मन्दिर की प्रांगण त्रयी में भगवती भीमा की कोटशैली में बनी पांच मंजिली दो देव्य इमारतें हैं जबकि अन्य भवन तीन मंजिलें हैं। इस मन्दिर परिसर में पहाड़ी वास्तुशिल्प का जीवन्त रूप दिख पड़ता है। यहां मन्दिर परिसर के एक-एक भवन से शिल्पियों के काष्ठशिल्प और प्रस्तर शिल्प का जादुई हुनर झलकता है। इस मन्दिर समूह में भीमाकाली के दो पांच मंजिलें मुख्य भवनों में से नई अट्टालिका की सबसे ऊपर वाली मंजिल में आद्यशक्ति के बाला रूप की पूजा की जाती है। यहां गर्भगृह में अष्टभुजी भीमाकाली की एक मीटर ऊंची मूर्ति वेदिका सहित सोने-चांदी के छतरों से सुसज्जित है। इससे नीचे की मंजिल में हिमालय पुत्री पार्वती स्थापित है। यहां पार्वती का विवाहित रूप दिखाया गया है। इसी मन्दिर के आंगन में रघुनाथ, नृसिंह, पाताल भैरव और लांकड़ा वीर के देवालय भी हैं। यहां बुजुर्गों का मत है कि देवी की मूल प्रतिमा पांच मंजिले पुराने मन्दिर में ही स्थापित है। यह मूर्ति आम जनता के लिए दर्शनार्थ नहीं है। इसी मूर्ति के साथ अन्य देवी-देवताओं की प्रस्तर मूर्तियां भी हैं। इन गुप्त प्रतिमाओं को विशेष अवसरों पर पूजा जाता है। यही दर्शनरोधी मूर्तियां भीमाकाली के गूढ़ रहस्यों

को उद्घाटित करती है।

भीमाकाली मन्दिर के नव भवन के प्रवेश द्वार के बाहर एक बृहदाकार स्पाट प्रस्तर शिला है। यहां मन्दिर का प्रवेश इस शिला को लांघ कर किया जाता है। बजीर माना जाता है। इन दोनों देवताओं के रथ रघुनाथ के पास बैठते हैं। जनश्रुति है कि इस शिला के भूतल में शाही परिवार के रियासती दुश्मनों का अहंकार समाहित हुआ है जो आते-जाते हर श्रद्धालुओं के पैर की ठोकर से आहत होकर बुशहर के राजसी घराने से मुक्ति की कामना करता है। महामाया भीमाकाली के प्रवेश द्वार के सम्मुख दाईं ओर तथा बाईं ओर प्रस्तर के शार्दूल हैं। यहां बाईं ओर तो सिंह शावक भी देखा जा सकता है। यह देवी स्थल सिंह प्रौल के नाम से विख्यात है।

भीमाकाली मन्दिर में त्रिकाल पूजा विधान है जो स्नान पूजा, नैवेद्य पूजा

तथा सांध्यकाल पूजा के नाम से जाती है। रात्रिकालीन बेला में शयन आरती की जाती है। भीमाकाली मन्दिर में यह पूजा ढोल-नगाड़ों की दुंदुभि के साथ की जाती है। यहां नवरात्रों के अतिरिक्त मकर सक्रान्ति, दशहरा, शिवरात्रि, दीपावली, होली आदि त्योहार भी परम्परागत ढंग से मनाए जाते हैं। नवरात्रों में अष्टमी और नवमी तथा रविवार और मंगलवार को भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ता है। इन सभी त्योहारों नसे दशहरा की अलग पहचान है। यह मेला आश्विन शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि त्रयोदशी तक मनाया जाता है। इस चार दिवसीय मेले में रघुनाथ की शोभायात्रा नकाली जाती है। इस मेले में दूर-दूर से देवता की पालकियां अर्थात् रथ शामिल जाते हैं। इनमें देवता साहिब बसाहरू (बसाहरा), देवता साहिब जाख (रचोली-रामपुर), देवता साहिब लक्ष्मी नारायण (किन्नू), देवता साहिब लक्ष्मीनारायण (मझगांव), देवता साहिब कुन्दरा नाग (कुन्नी) देवता साहिब बौण्डा नाग (बौण्डा), देवता साहिब निनसु (दराहली), देवता साहिब लाचा (गानवी), देवता साहिब जघोरी नाग (पन्द्रह-बीस), देवता साहिब लांकड़ावीर (कल्पा-किन्नौर), देवी साहिबा बाड़ी (कुल्लू), देवता साहिब डाबर कुण्डू (चाटी-कुल्लू) आदि के नाम गिनाए जा सकते हैं। इन देवताओं में देवता साहिब

बौण्डा नाग (बौण्डा) तथा देवता साहिब निनसु (दराहली) को भीमाकाली का बजीर माना जाता है। इन दोनों देवताओं के रथ रघुनाथ के पास बैठते हैं

सन् 1984 ई.से इस मन्दिर का प्रबन्ध मन्दिर न्यास द्वारा चलाया जा रहा है। भीमाकाली मन्दिर सराहन एक भव्य धार्मिक पर्यटक स्थल है। शिमला से हिन्दुस्तान तिब्बत राष्ट्रीय उच्च मार्ग-22 पर 163 कि.मी. का सफर तय करने पर सैलानी ज्युरी नामक स्थान पर पहुंच पाते हैं। यहां से भीमाकाली मन्दिर सराहन तक 17 कि.मी. का मार्ग है। रामपुर से यह रमणीय स्थली 44 किमी की दूरी पर है। यहां मन्दिर न्यास की ओर से श्रद्धालुओं के ठहरने के लिए 12 कमरों के सैट तथा एक डोरमेटरी की सुविधा उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त लोक निर्माण विभाग का परिधिगृह व विश्राम गृह तथा हिमाचल पर्यटन निगम का एक आलीशान बंगला भी है।

**भीमाकाली मन्दिर समूह :** भीमाकाली मन्दिर समूह में शामिल अन्य प्राचीन मन्दिरों का उल्लेख इस प्रकार

**1. हैरघुनाथ मन्दिर, सराहन :** भीमाकाली मन्दिर समूह में उल्लेखित मन्दिरों में रघुनाथ मन्दिर सराहन शिल्प कौशल की दृष्टि से सर्वाधिक समृद्ध मन्दिर कहा जा सकता है। प्रस्तर और काष्ठ शिल्प में बना यह मन्दिर सतरहवीं शताब्दी के मन्दिर निर्माण शैली के अनुरूप प्रतीत होता है। यह मन्दिर पहाड़ी वास्तु शिल्प में स्लेट की ढलवां छत से आच्छादित है। इसी छत के ऊपर केन्द्र में स्लेट से ओढ़ा गया गुम्बद (प्रकोटा) शोभायमान है।

यह मन्दिर पश्चिमाभिमुखी है। इस मन्दिर के बाईं ओर हनुमान की दो पाषाण मूर्तियां हैं। यहां मन्दिर के सम्मुख बाईं और दाईं ओर काष्ठ शिल्प में दो शार्दूल बने हैं। इस मन्दिर का प्रवेश द्वार चांदी की परत से मढ़ा है। जिसमें देवी-देवताओं, बेल-बूटों आदि के भाव भीने चित्र अंकित किए गए हैं। यह मन्दिर मूलतः राधा-कृष्ण को समर्पित होने के कारण ठाकुरद्वारा भी कहलाता था। कालान्तर में रघुनाथ की मूर्ति प्रतिष्ठापित होने पर यह रघुनाथ मन्दिर कहलाया। वर्तमान में भी यहां मन्दिर के गर्भगृह में राधा-कृष्ण की मूर्ति केन्द्रवर्ती

सिंहासन पर विराजमान है। इसके साथ बाईं ओर राम-सीता तथा दाईं ओर लक्ष्मण और श्री देवी, मातृदेवी व भूदेवी की मूर्तियां हैं। इस पूजा आसन के सामने आरोही क्रम में 26 शालीग्राम तथा चार लड्डू गोपाल की मूर्तियां हैं। इसके साथ नीचे की

ओर चरण पादुका और इसके दोनों ओर हनुमान की दो-दो मूर्तियां हैं जो रघुनाथ के प्राति सेवज्ञ भाव को दर्शाती है। इस मुख्य पूज के दाहिनी ओर एक पूजा आसन पर राधा-कृष्ण, नृत्य मुद्रा में नटराज शिव, बंसीधर, गणपति, गौतम बुद्ध, हनुमान, लड्डू गोपाल, माता वसुन्धरा आदि देवी-देवताओं की मूर्तियों के साथ दुर्गा श्री शिवलिंग और 27 शालीग्राम भी हैं। इसी भांति मुख्य पूजा पीठिका के बाईं ओर एक अन्य पूजा आसन पर राधा-कृष्ण, लड्डू गोपाल, मुरलीधर, गौतम बुद्ध, चतुर्भुज विष्णु, गणपति, सिंह वाहिनी दुर्गा, भगवती सरस्वती आदि देवी-देवताओं की मूर्तियों के साथ सतरह शालीग्राम भी हैं।

लोक मान्यता है कि रियासती समय बुशहर के राजा विजय सिंह का कुल्लू के राजा से युद्ध हुआ जिसमें कुल्लू का राजा मारा गया। कुल्लू का राजा युद्ध के समय रघुनाथ जी की एक छोटी-सी प्रतिमा अपने साथ रखता था। इस प्रतिमा को बुशहर के राजा अपने साथ सराहन ले आए और भीमाकाली मन्दिर परिसर में इसे स्थापित कर दिया। उसी समय से कुल्लू दशहरा की परम्परा पर यहां भी दशहरा मनाया जाता है। यह आयोजन तीन दिन चलता है। इसमें रघुनाथ जी की शोभा यात्रा निकाली जाती है। इस मन्दिर में त्रिकाल पूजा का विधान है जिसमें स्नान पूजा,

नैवेद्य

पूजा

और सांध्य पूजा के नाम से पूजा की जाती है। रात्रिकालीन

बेला में शयन आरती की जाती है।

**2. नृसिंह मन्दिर, सराहन :** यह मन्दिर भीमाकाली मन्दिर परिसर के प्रवेश द्वार पर है। इसकी निर्माण शैली में पहाड़ी वास्तु और नागर शिल्प का भव्य समन्वय

देखने को मिलता है। इस प्रस्तर शैली के मन्दिर में बाहर की दीवारों पर असंख्य देवी-देवताओं के चित्र उकेरे गए हैं। यहां मन्दिर के दोनों ओर हनुमान की पाषाण मूर्तियां हैं। इस मन्दिर के प्रवेश द्वार के दोनों ओर देवी की मूर्तियां और बेल-बूटे उत्कीर्ण हैं जबकि ललाट बिम्ब पर गणपति की मूर्ति उकेरी गई है। यहां मन्दिर के गर्भगृह में नृसिंह देवता की मूर्ति है जो संगमरमर की बनी है। इसमें देवता का वह विराट रूप देखने को मिलता है जिसमें नृसिंह अपने भक्त की रक्षा करते हुए हिरण्यकाशिपु का वध करते दिखाए गए हैं। नृसिंह शंख और चक्र आयुद्धों से भी सुसज्जित दिख पड़ते हैं। नृसिंह की इस चतुर्भुजी श्वेत

संगमरमर की मूर्ति की स्थापना सन् 1983 ई. में की गई है। इसी पूजा में एक गणेश की मूर्ति है और विष्णुस्वरूपा शालीग्राम भी है। यहां मन्दिर में एक शिवलिंग भी प्रतिष्ठापित है। इस मन्दिर की नृसिंह देवता की प्राचीन मूर्ति रामपुर के नृसिंह, के मन्दिर में रखी गई है।

बुशहर राज परिवार में नृसिंह भगवान को महत्त्व दिया जाता था। इस देवता को न्याय का देवता भी माना जाता है। बुशहर रियासत की न्याय परम्परा में नृसिंह देवता को साक्षी मानकर निर्णय सुनाए जाते थे। बुशहर रियासत में यह परम्परा रही है कि जब भी कोई राजा युद्ध के लिए निकलता था अथवा राजधानी बदलता तो वह नृसिंह भगवान की मूर्ति अपने साथ अवश्य ले जाता था। इस मन्दिर में द्विकाल पूजा की जाती है। यहां शिवरात्रि को शिवार्चन किया जाता है। इस मन्दिर में अन्य त्योहारों को मनाने की परम्परा नहीं है।

### **3. लांकड़ा वीर मन्दिर, सराहन :** यह मन्दिर भगवती भीमाकाली के

प्रवेश द्वार पर है। भीमाकाली के इस प्रहरी का मन्दिर बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में पहाड़ी वास्तु शिल्प में बना है। इस मन्दिर का प्रवेश द्वार पीतल की चादर से मढ़ा हुआ है जिसमें बेल-बूटों की नक्काशी है। इसके ललाट बिम्ब पर शंकर की आकृति उकेरी गई है। इसी के साथ कुछ ऊपर बाईं ओर भैरव की मूर्ति भी है। इस

मन्दिर के भीतर पूजा आसन पर भी भैरव की ही मूर्ति है।  
यहां लांकड़ा वीर की कोई मूर्ति नहीं है तथापि लकड़ी के खम्बों तथा त्रिशूल में बांधी गई कुछ ध्वजाएं इस देवता का प्रतीक चिह्न हैं। इस मन्दिर के भीतर एक कुआं है जिसे लांकड़े का कुआं कहा जाता है। लांकड़ा वीर को पाताल भैरव भी कहा गया है। इसके भीतर एक गुप्त दरवाजा भी है जिसका प्रयोग तत्कालीन शासक विपत्ति के समय करते थे। जनश्रुति है कि इस मन्दिर में प्राचीनकाल से नरबलि की परम्परा भी रही जो अब नहीं है। लांकड़ा वीर की पूजा भी नियमित रूप से अन्य देवताओं के साथ की जाती है। सराहन से ही श्री खण्ड शिखर की दृश्यावली का भी आनंद लिया जा सकता है। जनश्रुतियों में श्रीखण्ड को लक्ष्मी का मायका माना जाता है।

**4. रघुनाथ मंदिर बड़ा अखाड़ा, रामपुर :** यह मन्दिर, बड़ा अखाड़ा वैरागियों के अखाड़े के नाम से भी जाना जाता है। इस मन्दिर की स्थापना भी महन्तों द्वारा की गई है। इसे लम्बू अखाड़ा भी कहा जाता है। इस मन्दिर के शिखर का सन् 1992-93 के आसपास जीर्णोद्धार करवाया गया। अब इसके ऊपर कंकरीट का गुम्बदनुमा शिखर सा बना दिखाई देता है। इसका मूल ढांचा पुरातन प्रस्तर शैली में यथावत संरक्षित है। यहां मन्दिर के बाहर भी दीवारों पर हनुमान, गणपति आदि विभिन्न देवी-देवताओं के चित्र उत्कीर्ण किए गए हैं। यहां मन्दिर के प्रवेश द्वार के सम्मुख अर्धमण्डप में हनुमान की ग्यारह पाषाण मूर्तियां रखी गई हैं जिसमें हनुमान के रूद्रावतार के दर्शन भी होते हैं।

रघुनाथ मन्दिर बड़ा अखाड़ा के पूजा सिंहासन पर श्री राम की मुख्य मूर्ति है। इनके बाईं ओर सीता तथा दाईं ओर लक्ष्मण की मूर्ति है। यह सभी मूर्तियां संगमरमर की हैं। यहीं पर शेष शाय्ही चतुर्भुज विष्णु, कृष्ण, ब्रह्मा, गरूड़, हनुमान, सीता सहित धातु की लगभग 30 मूर्तियां हैं। इनके अतिरिक्त 31 शालीग्राम भी पूजा में रखे गए हैं।

बुशहर रियासत की राजधानी रामपुर में शाही परिवार की भगवद् रूचि के फलस्वरूप यह मन्दिर महंत परम्परा का अखण्ड अखाड़ा रहा है। यह मन्दिर

लगभग दो सौ वर्ष पुराना है। एक धार्मिक विश्वास के अनुसार महन्त विवाह नहीं रचा पाते थे। लेकिन अन्तिम महन्त उधोदास द्वारा विवाह करने पर उनसे मन्दिर सहित सभी सम्पत्ति छीन ली गई थी। यह भूमि भू-दान आन्दोलन के समय दान कर दी गई तथा मन्दिर का प्रबन्ध सन् 1975 ई. को एक समिति को सौंपा गया। अब इसे मन्दिर न्यास के अधीन लाया गया है। यह मन्दिर परिसर काफी सुन्दर तथा विस्तृत है। यहां प्रायः भजन कीर्तन का कार्यक्रम चलता रहता है। इस मन्दिर में द्विकाल नियमित पूजा

के अतिरिक्त कृष्णजन्माष्टमी तथा रामनवमी के त्योहार

बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं।

### **5. नृसिंह मंदिर, रामपुर :** बुशहर रियासत का नृसिंह मन्दिर पहाड़ी वास्तु

और शिखर शिल्प का अद्वितीय उदाहरण है। यह मन्दिर रियासत के प्राचीनतम मन्दिरों में एक है। इस मन्दिर में काष्ठ कला और प्रस्तर शिल्प का अनुपम मेल दिखाई देता है। शिखर शैली के इस मन्दिर की शिखा आमलक और कलश से

सजी है। इसका मध्यभाग उरूश्रृंग से सुशोभित है। नागर शैली में बने शिखर के मूल से निःस्त ढलवां छत्त प्रस्तर की स्लेट से आच्छादित है। पहाड़ी शैली और शिखा शैली का यह दोहरा शिल्प नृसिंह मन्दिर की विशिष्ट पहचान बना पाता है। यहां मन्दिर के सामने लक्ष्मी स्वरूपा तुलसी का चबूतरा बना है।

नृसिंह मन्दिर के प्रवेश द्वार और बाह्य दीवारों पर देवी-देवताओं के कलात्मक चित्र उकेरे गए हैं जो अत्यधिक पुरातन होने पर धुन्धले से पड़ गए हैं।

इस मन्दिर का ललाट बिम्ब गणपति की मूर्ति

से सजा है। यहां मन्दिर के गर्भगृह में प्रह्लाद

भक्त के पिता हिरण्यकाशिपु का मर्दन करते

भगवान नृसिंह की रजत प्रतिमा स्थापित है।

इसी मूर्ति के सामने गणेश और हनुमान की

मूर्तियां हैं। यहीं एक शालीग्राम भी रखा है।

नृसिंह मूर्ति के पार्श्व भाग पर विष्णु, वराहा,



राधा-कृष्ण और गरूड़ की मूर्तियां भी हैं।  
इसी सिंहासन पर नृसिंह के दाईं ओर दुर्गा  
तथा बाईं ओर राधा-कृष्ण और गरूड़ तथा  
चार शालीग्राम रखे हैं। राधा-कृष्ण की एक  
अन्य मूर्ति दीवार पर बाईं ओर रखी है। रामपुर के लगभग सभी मन्दिरों में  
शालीग्राम काफी संख्या में रखे गए हैं। इसका मूल कारण यह माना जाता है कि  
जब कभी साधु-सन्त श्रीखण्ड यात्रा के लिए रामपुर पहुंचते थे तो उन्हें जब तीर्थ  
यात्रा के कठिनाई युक्त मार्ग का पता चलता था फिर वह अपने साथ लाए  
शालीग्राम रामपुर के मन्दिरों में छोड़ जाते थे।  
यह मन्दिर पश्चिमाभिमुखी है। इस मन्दिर परिसर के प्रांगण में चारों ओर  
लगभग चौतीस आलिंद बने हैं। यह गुप्तियां अधिक प्राचीन नहीं हैं। जनश्रुति है कि  
यह लघु देवालय भगवान विष्णु के चौबीस और दशावतारों की मूर्तियों के लिए  
बनाए गए थे। इनमें से कुछ गुप्तियों में अवतारों की पाषाण मूर्तियां रखी गई हैं। यहां  
मन्दिर, प्रांगण के साथ एक विशाल भवन भी है। जिसमें समय-समय पर धार्मिक

अनुष्ठान करवाए जाते हैं।

शाही घरानों में यह परम्परा भी थी कि जब भी किसी राजकुमारी का विवाह होता  
नृसिंह देवता की स्थापना का सम्बन्ध बुशहर राज परिवार से रहा है।  
था वह अपने साथ अराध्यदेव अथवा कुल देवता की मूर्ति या प्रतीक चिन्ह साथ  
लेकर जाती थी तथा उसकी पूजा-अर्चना अपने ससुराल में करती थी। नृसिंह  
मन्दिर का सम्बन्ध भी इसी परम्परा से है। इस मन्दिर का निर्माण सम्वत् 1802  
अर्थात् सन् 1852 ई. में किया गया है। राजा बुशहर की सुकेती रानी ने नृसिंह  
प्रतिमा सुन्दरनगर से अपने साथ रामपुर बुशहर लाई थी तथा पृथक् मन्दिर बनाकर  
वहां उसको स्थापित करवाया था। इस देवता की जागीर रिस्पा (किन्नौर) तथा  
सुवा-भौड़ा (चढ़गांव) में भी थी। किन्तु भूमि सीमा अधिनियम के पश्चात् इस  
पर मुजारों का अधिकार हो गया  
है।

नृसिंह मन्दिर की व्यवस्था भीमाकाली मन्दिर समूह के अन्य मन्दिरों की तरह सरकार द्वारा स्थापित न्यास द्वारा की जाती रही है। इस मन्दिर में नियमित रूप से प्रातः तथा सांय पूजा करने का विधान है। नृसिंह जयन्ती के अवसर पर मन्दिर में अखण्ड कीर्तन होता है। यहां निर्जला एकादशी का त्योहार भी परम्परागत ढंग से मनाया जाता है। इसके अतिरिक्त दिवाली तथा दशहरे के अवसर पर औपचारिक पूजा की जाती है। यहां नृसिंह मन्दिर में हर जेठे वीरवार को नृसिंह देवता को रोट चढ़ाने की पुरानी प्रथा है।

**6. रघुनाथ, चौबच्चा मंदिर, रामपुर :** यह मन्दिर पहाड़ी शैली में निर्मित है। इस मन्दिर का निर्माण बुशहर राज महल के साथ टीका रघुनाथ के समय में

किया गया था। यह मन्दिर मूलतः टीका रघुनाथ का पूजा कक्ष था। इसीलिए इसे चौबच्चा मन्दिर कहा जाता था। इस मन्दिर को स्थानीय बोली में "चाह बच्चा" भी कहा जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ बच्चों की इच्छा पूरी करने वाला मन्दिर है जो कि उचित प्रतीत नहीं होता क्यों के इस सम्बन्ध में कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। राजा पदम सिंह के शासन काल में इस मन्दिर का विस्तार किया गया तथा इसे एक सार्वजनिक मन्दिर कार र प्रदान किया गया था।

इस मन्दिर के पूजा स्थल में रखी गई रजत प्लेट पर श्री राम परिवार का

अंकन हुआ है। इसके साथ ही दोनों ओर पृष्ठभाग में हनुमान की मूर्तियां रखी गई है। जो उनके राम भक्त सेवक होने का भाव दर्शाता हैं। एक परम्परा अनुसार यहां मुख्य मन्दिर में भीमाकाली और लांकड़ा वीर की मूर्तियां भी हैं। यहां सिंहासन पर लड्डू गोपाल, काहना, राधा-कृष्ण की मूर्तियों के अलावा 15 से 20 की संख्या तक शालीग्राम रखे हैं। चौबच्चा मन्दिर के नाम पर कोई विशेष मेला तथा त्योहार नहीं मनाया जाता है। इस मन्दिर में सुबह-शाम नियमित पूजा का विधान है। इस मन्दिर का प्रबन्ध सरकार द्वारा स्थापित न्यास को सौंपा गया है। यहां हर मंगलवार को हनुमान के नाम पर रोट चढ़ाया जाता है। इसी मन्दिर के पार्श्व भाग पर श्री

भीमाकाली मन्दिर न्यास का कार्यालय भी चलाया जा रहा है।

## **7. जानकी माई गुफा मंदिर, रामपुर :**

रामपुर करखे की तलहटी में सतलुज नदी के बाएं तट पर जानकी माई गुफा मन्दिर स्थित है। जानकी माता को समर्पित यह मन्दिर पहाड़ी वास्तु शैली में बना है। यह मन्दिर महन्त परम्परा के अग्रदूत महन्तों द्वारा बनाया गया है। इस पीढ़ी के अन्तिम महन्त हरिदास रहे हैं। इस मन्दिर के सामने एक गुफा है जो जानकी माई गुफा के नाम से मशहूर है।

इस मन्दिर के सम्मुख एक खुला प्रांगण है जिसमें मन्दिर के पास एक तुलसी चौरा है। यह मन्दिर प्रस्तर शिल्प की नींव पर बना है। इस मन्दिर की बाह्य प्रस्तर दीवारों पर बाईं ओर हनुमान, भैरव और दुर्गा की मूर्तियां तथा दाईं ओर हनुमान की मूर्ति और पार्श्व प्रस्तर दीवार पर गणेश आदि देवी-देवताओं की मूर्तियां उकेरी गई हैं। यहां मन्दिर के प्रवेश द्वार का ललाट बिम्ब गणपति की उत्कीर्ण मूर्ति से सुसज्जित है।

जानकी माई गुफा मन्दिर के पूजा सिंहासन के केन्द्र में जानकी माता की संगमरमर की मूर्ति है। इनके दाईं ओर श्री राम तथा बाईं ओर लक्ष्मण की मूर्ति है। एक अन्य आसन पर भगवती दुर्गा, सरस्वती, विष्णु, लङ्केश्वर गोपाल, आदि की धातु में निर्मित मूर्तियां हैं। यहां मन्दिर में 20 शालीग्राम तथा एक अभिनव शिवलिंग भी हैं।

गरुड़

इस मन्दिर में प्रतिदिन प्रातः तथा सांय पूजा की जाती है। इस मन्दिर में विशेष रूप से कोई भी त्योहार तथा पर्व नहीं मनाया जाता तथापि सभी महत्त्वपूर्ण

त्योहारों तथा पर्वों के अवसर पर विशेष पूजा का विधान है। इस मन्दिर के नाम रामपुर तथा रोहड़ क्षेत्र में विपुल सम्पत्ति है जहां से इसे कुछ आय प्राप्त होती है। सन् 1960 ई. में इसका प्रबन्ध एक समिति द्वारा अपने हाथ में लिया गया था। अब इसे सरकार द्वारा गठित मन्दिर न्यास के अन्तर्गत रखा गया है। इस मन्दिर में अपेक्षाकृत कम श्रद्धालु जाते हैं। परन्तु इस मन्दिर का पुरातात्विक एवं धार्मिक दृष्टि से विशेष महत्त्व है।

## **8. रघुनाथ बड़ा लम्बू अखाड़ा दशालणी रोहड़ :** यह मन्दिर भी

भीमाकाली मन्दिर समूह में शामिल है। शिमला जिला के रोहड़ उपमण्डल में मध्य रेखा से 31°13' उत्तरी अक्षांश तथा 77°45' पूर्वी रेखांश के मध्य समुद्रतल 1550 मीटर की ऊंचाई पर रघुनाथ मन्दिर दशालणी में स्थित है। इस मन्दिर की स्थापना शाही परिवार के सान्निध्य में महंत सुदर्शन दास ने अपने गुरु तुलसी दास के सम्मान में करवाई थी। यह मन्दिर सन् 1921 ई. को महाराजा पदम सिंह के शासन में दशालणी के दुर्गनुमा शाही महल में बनकर तैयार हुआ है। पब्बर नदी के दामन में बने इस एक मंजिला मन्दिर में प्रवेश करने पर सबसे पहले हनुमान का छोटा सा देवालय है। इसके बाद रघुनाथ मन्दिर के दर्शन होते हैं। इस मन्दिर में एक रथ पर राम, सीता और लक्ष्मण की संगमरमर की मूर्तियां हैं। यहां पूजा में लगभग 25-30 शालिग्राम भी हैं। इस मन्दिर में परिक्रमा पथ भी बना है। यह मन्दिर शिमला से 120 किलोमीटर की दूरी पर है।

## **श्री अयोध्यानाथ मन्दिर, रामपुर**

पुरातात्विक महत्त्व की संरचना श्री अयोध्यानाथ मन्दिर भी शिमला जिला के रामपुर उपमण्डल मुख्यालय में स्थित है। यह मन्दिर बुशहर रियासत के शाही मन्दिरों में एक है। रामपुर बस अड्डा के समीप एक रमणीय भू-भाग पर बने इस मन्दिर के साथ महाराजा शमशेर प्रकाश के भाई मियां फतेह सिंह (1837-76 ई.) का बेड़ा था। यह महल लोक मानस में "ढंका माथे बेड़ो" नाम से विख्यात रहा। इस राजसी बेड़ा का जीर्णोद्धार कर यहां अब आधुनिक ढंग का तीन मंजिला भवन बनाया गया है। इस नवनिर्मित भवन के सान्निध्य में श्री अयोध्यानाथ मन्दिर आज भी पुरातन स्वरूप में विद्यमान है।

यह मन्दिर नागर शैली के मन्दिरों की अनन्यतम मिसाल है। इस दक्षिणाभिमुखी मन्दिर के बाहर दोनों ओर हनुमान की प्रस्तर तथा कंकरीट की बनी मूर्तियां हैं। यहां मन्दिर का शिखर आमलक और कलश से सुशोभित है। इस मन्दिर का मध्य भाग उरूश्रृंग के साथ-साथ युगल शार्दूल और त्रिदेव से अलंकृत है। प्रस्तर शिल्प के इस मन्दिर का अधोभाग गवाक्षों से सजा है। इन में मन्दिर की बाई

ओर बने गवाक्ष में चतुर्भुजी सिंहवाहिनी दुर्गा तथा दाई ओर मुषक वाहना गणपति की मूर्तियां हैं जबकि पार्श्व गवाक्ष में वृषवाहना शिव-पार्वती की मूर्तियां हैं। इसी मन्दिर की प्रस्तर दीवारों पर अनगिनत देवी-देवताओं की मूर्तियां उकेरी गई हैं। श्री अयोध्यानाथ मन्दिर के प्रवेश द्वार के दोनों ओर बेल-बूटों, फूल-पत्तियों की भव्य नक्काशी हुई है। इस मन्दिर का ललाट बिम्ब गणपति की मूर्ति से सुसज्जित है। इससे ऊपर वाले भाग पर बाईं ओर गदाधारी हनुमान तथा दाईं ओर गुरूङ नारायण अंकित है। इनके शीर्ष पर ब्रह्मा, विष्णु और महेश नाम से त्रिदेव सजे हैं। इस मन्दिर का वास्तुशिल्प शिल्पी के कुशल हस्तशिल्प को दर्शाता है। इस मन्दिर में राम दरबार सजा है जबकि पूजा पीठिका पर अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियों को भी सजाया गया है। यहां मन्दिर के मध्य में एक रजत सिंहासन पर राम, सीता, लक्ष्मण, शत्रुघ्न और भरत की मूर्तियां हैं। श्री राम के सामने एक मूर्ति हनुमान की है जो श्रीराम के प्रति दास्य भाव को दर्शाती है। राम

दरबार के बाईं ओर राधा-कृष्ण और दो भुजी दुर्गा की दो मूर्तियां हनुमान सहित अलग-अलग चांदी के आसन पर हैं। इसके साथ सत्ताईस शालीग्राम भी पूजा में रखे गए हैं। राम दरबार के दाईं ओर एक अन्य रजत आसन पर श्वेत संगमरमर में बद्रीनारायण की मूर्ति, बाल-गोपाल, दुर्गा, कृष्ण, गणेश, हनुमान आदि देवी-देवताओं की मूर्तियां हैं। यह सभी मूर्तियां अष्टधातु, पीतल, चांदी आदि में बनी हैं। इस मन्दिर में पाषाण और धातु की कुल सत्ताईस मूर्तियां हैं।

जनश्रुति है कि इस मन्दिर का निर्माण रामपुर शहर के संस्थापक राजा राम सिंह (1767-99 ई.) ने करवाया। उनका विवाह अयोध्या से हुआ था। उनकी रानी मायका से श्री राम की मूर्ति साथ लेकर आई। राजवंश की रक्षा के लिए राजा रामसिंह ने श्री अयोध्यानाथ मन्दिर बनवाया था। इस मन्दिर के प्रति शाही घराने की हरी आस्था और विश्वास रहा है। यह भी लोकश्रुति है कि इस मन्दिर के साथ सियां फतेह सिंह ने भी कालान्तर में ही बेड़ा बना लिया था। यहां रियासती आवास और श्री अयोध्यानाथ मन्दिर का सम्मिलित रूप देखने को मिलता था। इस मन्दिर

के साथ यात्रियों और श्रद्धालुओं को ठहरने के लिए सराय भी थी।  
इस मन्दिर की देखभाल रियासतीकाल में शाही परिवार करता था।  
स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद इस मन्दिर के संचालन के लिए सन् 1952 ई. को एक  
मन्दिर समिति का गठन किया गया। यह मन्दिर हिमाचल प्रदेश हिन्दू सार्वजनिक  
धार्मिक संस्थान एवं पूर्त विन्यास अधिनियम 1984 के अधीन सरकार द्वारा  
अधिगृहीत कर मन्दिर न्यास का गठन किया गया है। अब इस मन्दिर प्रबन्ध मन्दिर  
न्यास द्वारा चलाया जा रहा है।  
श्री अयोध्यानाथ मन्दिर में प्रातः तथा सांय द्विकाल पूजा मन्दिर न्यास द्वारा  
नियुक्त पुजारी करता है। यहां हर वर्ष दशहरा का त्योहार धूमधाम से मनाया जाता  
है।  
है। इस अवसर पर श्री अयोध्यानाथ जी दरबार की रथयात्रा निकाली जाती है। इस  
शोभा यात्रा में सारे कस्बे के लोग शामिल होते हैं। इसके अतिरिक्त इस मन्दिर में  
बसन्त पंचमी, होली, बैशाखी, कृष्ण जन्माष्टमी, रामनवमी आदि भी मनाए जाने  
की परम्परा है। यहां मन्दिर में सभी पर्वों पर विशेष पूजा-अर्चना की जाती है। यह  
मन्दिर शिमला से 130 किलोमीटर की दूरी पर है।

## **बौद्ध मन्दिर, रामपुर बुशहर**

शिमला जिला के रामपुर उपमण्डल में भूमध्य रेखा से 3127' उत्तरी  
अक्षांश तथा 7738' पूर्वी रेखांश के मध्य समुद्रतल से 1000 मीटर की ऊंचाई पर  
बौद्ध मन्दिर रामपुर बस स्टैण्ड के पास स्थित  
रामपुर में तिब्बतीयन शैली में  
निर्मित दुम्युर नामक बौद्ध मन्दिर बुशहर  
रियासत के टीका रघुनाथ सिंह ने सन् 1895  
ई. को स्थापित करवाया। इन्होंने बौद्ध मन्दिर  
की प्रतिष्ठा के लिए रिन्पोचे लामा लौतसावा  
को शिगत्से के तालीसगयो बौद्ध विहार से  
सन् 1897 ई. में रामपुर बुलाया था। दुम्युर

तिब्बती भाषा का शब्द है। तिब्बती भाषा के अनुसार दुग्युर का अर्थ दस करोड़ मन्त्रों का संग्रह होता है। दुग्युर एक विशाल प्रार्थना चक्र होता है जो बौद्ध मन्दिर के भीतर खुले स्थान पर लगा होता है। इस चक्र के अवतल भाग पर लगे हजारों पत्रों में 'ऊं पो यूं' मन्त्र लिखा होता है। दुग्युर का सम्बन्ध इमानी-फानी में समाहित अनगिनत बौद्ध मन्त्रों से लिया जाता है।

यह बौद्ध मन्दिर पुरातात्विक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण स्मारक है। इसमें स्थापित दुग्युर शिमला जिला के बौद्ध मन्दिरों का सबसे पुरातन और

बृहद्

इमानी-फानी माना जाता है। इस बौद्ध मन्दिर में गौतम बुद्ध की चीनी मिट्टी से बनी तीन विशाल प्रतिमाएं हैं। इनके अलावा 27 मूर्तियां और भी हैं। बौद्ध मन्दिर की भीतरी दीवारों पर बुद्ध के जीवन चरित्र को चरितार्थ करते भित्ति चित्र अत्यन्त संजीव दिख पड़ते हैं। यह भित्ति चित्र सत्य, ईमानदारी, आस्तिकता आदि जीवनोपयोगी सार तत्व का संदेश देते हैं। इस मन्दिर में बौद्ध गया से लाया गया एक

पाषाण रत्न भी रखा गया है।

है। महाराजा पदम सिंह (1914-47 ई०) के शासनकाल में बौद्ध धर्म को सुदृढ़ किया गया है। यह मन्दिर उपमण्डल मुख्यालय रामपुर में होने पर शिमला से 130 इस बौद्ध मन्दिर में बौद्ध धर्म पर आधारित साहित्य का अक्षुण्ण भण्डार करने के लिए तिब्बत से कंप्पूर और तंग्यूर नामक पुस्तकें मंगवाई थी जो इसी मन्दिर में रखवाई गईं। इस बौद्ध मन्दिर में 108 पुस्तकें श्रुति पर तथा 16 घूमपति पुस्तकें भी रखी गईं। घूमपत में बौद्ध मन्त्रों का संग्रह देखा जा सकता है। बौद्ध धर्म के यह उपयोगी धार्मिक ग्रन्थ आज भी दुग्युर मन्दिर रामपुर में विद्यमान है। इस मन्दिर में प्रातः और सांय द्विकाल का पूजा विधान है। यहां नित्यप्रति शु- देसी घी की ज्योति ज्वालायमान रहती है। बौद्ध धर्म के अनुयायी दुग्युर में बौद्धत्सव प्राप्ति की कामना से पूजा-अर्चना के लिए आते हैं। बौद्ध धर्म परम्परा के

,त्योहार बुद्ध पूर्णिमा और बुद्ध जयन्ती यहां हर्षोल्लास के साथ मनाई जाती है। इस बौद्ध मन्दिर में अष्टमी, दशमी, अमावस तथा पूर्णिमा की पूजा 108 दीपक प्रज्वलित कर की जाती है। बौद्ध धर्म की इस विशिष्ट पूजा को 'गयेमछोद' कहा जाता है। इस पूजा में सत्तु के 108 छोक्स भी बनाए जाते हैं। यह पूजा बौद्ध धर्म की विशेष पूजाओं में एक है।

इस बौद्ध मन्दिर की बुशहर रियासत के रामपुर और रोहडू में काफी सम्पत्ति है। इस मन्दिर में इन क्षेत्रों की सम्पत्ति से भी कुछ आय प्राप्त होती है। यहां श्रद्धालुओं का आना जाना कम है। सन् 1960 ई. को इस बौद्ध मन्दिर का प्रबन्ध एक समिति के पास था। यह मन्दिर हिमाचल प्रदेश हिन्दू सार्वजनिक धार्मिक संस्थान एवं पूर्त विन्यास अधिनियम 1984 के अधीन सरकार द्वारा अधिगृहीत किलोमीटर की दूरी पर है।

## **श्री दत्तात्रेय मन्दिर, दत्तनगर, रामपुर**

शिमला जिला के रामपुर बुशहर उपमण्डल में भूमध्य रेखा से 3127' उत्तरी अक्षांश तथा 77°38' पूर्वी रेखांश के मध्य सतलुज नदी के बाएं तट पर दत्तात्रेय मन्दिर समुद्रतल से 950 मीटर की ऊंचाई पर दत्तनगर में स्थित है। यह मन्दिर राष्ट्रीय उच्च मार्ग-22 पर होने से श्रद्धालुओं को यहां पहुंच पाने में सुविधा रहती है। दत्तात्रेय मन्दिर पहाड़ी वास्तु शैली में बना है। इस आयताकार मन्दिर की ढलवां छत प्रस्तर की सपाट स्लेटों से आच्छादित है। छत की ढलान अधोसंरचना से लेकर शिखर तक लकड़ी के अनेक धरणों पर टिकी है। छत चारों ओर से लकड़ी की



झालर के साथ सुसज्जित है। इस मन्दिर का निर्माण पहाड़ी शिल्प के अनुरूप लकड़ी और पत्थर के साथ हुआ है। यहां मन्दिर की एक दीवार पर कुछ अलंकृत आयताकार पत्थर चिनाई में लगाए गए हैं जिन पर बेल-बूटे, फूल, अनेक देवी-देवताओं, गंगा और यमुना नदी-देवियों आदि की आकृतियां उकेरी गई हैं। इस शिल्पीय अलंकरण को देखने से भ्रम होता है कि कालान्तर में इस स्थल पर शिखर शैली का मन्दिर बना होगा जिसके अवशेष दत्तात्रेय मन्दिर की भित्ति पर दिख पड़ते हैं। इसके साथ-साथ अन्य शिलाओं पर भी देवी-देवताओं की आकृतियां उत्कीर्ण की गई हैं। इस मन्दिर के प्रवेश द्वार का ललाट बिम्ब (सिरदल) लघु आकृति के चतुर्भुज गणेश से शोभायमान है। इसी भाग के दाएं ऊपर की ओर महिषासुरमर्दिनी की चार भुजा वाली प्रस्तर की मूर्ति है। इसके नीचे खड़े उपासक की काष्ठ मूर्ति है। इसके बाईं ओर ऊपरले भाग पर सिंहवाहिनी चतुर्भुज दुर्गा की मूर्ति है। यहां मन्दिर के इर्द-गिर्द अनगिनत देवी-देवताओं के भग्नावेष बिखरे पड़े हैं।

इस मन्दिर का बाहरी कक्ष वर्गाकार है। इसके अनन्तर एक आयताकार कक्ष है। लोकश्रुति है कि इसी कक्ष में काष्ठ वेदिका पर ताम्र फलक में बनी भगवान दत्तात्रेय और इनके पिता महर्षि अत्रि तथा माता अनसूया की वरदान (सन्नद्ध) मुद्रा में एक-एक मीटर ऊंची प्रतिमाएं हैं। यह प्रतिमाएं सुगढ़ शिल्प के अनुरूप तो नहीं हैं लेकिन किंवदन्ति है कि यह मूर्तियां मूलतः सोने की थीं जो श्रीहरि ने महर्षि अत्रि की भावगम्य भक्ति को देखकर कहा"- 'दत्तो मयाहमिति' उनीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में गोरखा आक्रान्ता लूटकर ले गए। यहां अन्दर के कक्ष में ही काफी संख्या में पुरातन मूर्तियां रखी हैं। इनमें से एक मूर्ति भूमिस्पर्श मुद्रा में ध्यानी बुद्ध की भी है।

यहां मन्दिर परिसर के सीमान्त छोड़ पर भी एक प्रवेश द्वार है। तदनन्तर अंगण से होकर मन्दिर तक पहुंचा जा सकता है। यहीं मन्दिर के समीप देवता का कभण्डारागार भी बना है। इस अन्न भण्डारण गृह के मुख्य द्वार पर हनुमान की जाधी उभरी काष्ठमूर्ति भी दिख पड़ती है। यह भण्डार सम्भवतः देवता को चढ़ाए

जर अन्न भण्डारण के उद्देश्य से बना प्रतीत होता है। इस भण्डार की शिखा पर रखे गए काष्ठ धरण पर विजय और इच्छापूर्ति के प्रतीक ताम्र कलश, सुराहीदार कलश, पीतल और कांसे के लोटे, मिश्रित धातुओं में बनी छतरी अर्थात् छत्र, त्रिशूल आदि लगे दिखाई देते हैं।

रामपुर के दत्तनगर गांव के मध्य बना दत्तात्रेय मन्दिर गांव के नामकरण का सुस्पष्ट उद्बोधक है। वर्तमान मन्दिर का पुनर्निर्माण गोरखा आक्रान्ताओं को रियासत से बाहर खदेड़ने के बाद स्थानीय शासक द्वारा करवाया गया प्रतीत होता है। देवेश्वर दत्तात्रेय को श्री विष्णु के चौबीस अवतारों में छटा अवतार माना जाता है। इस अवतार की परिसमाप्ति नहीं है, इन्हें अविनाशी भी कहा जाता है। यह समस्त सिद्धों के राजा होने पर सिद्धराज कहे जाते हैं। गिरनार की पहाड़ियां दत्तात्रेय जी की सिद्धपीठ हैं। योगविद्या के स्वामी होने पर इन्हें देवेश्वर भी कहा जाता है। पैराणिक आख्यान में उल्लेख मिलता है कि महर्षि अत्रि की घोर भगवद् तपस्या से दत्तात्रेय माता अनसूया के गर्भ से अवतरित हुए। श्रीमद्भागवत कथान्तर्गत वर्णन आता है कि "महर्षि अत्रि ने ध्याननिमग्न मुद्रा में विष्णु से वर मांगा कि मुझे प्राणियों का दुःख निवारण करने वाला पुत्र प्राप्त हो। भक्त वत्सल श्रीहरि ने महर्षि अत्रि की भावगम्य भक्ति को देखकर कहा" 'दत्तो मयाहमिति

यद्भगवान स दत्तः' अर्थात् मैंने निज को तुम्हें दान कर दिया है। महर्षि अत्रि का पुत्र होने पर इन्हें आत्रेय कहा जाता है। भगवान विष्णु द्वारा दिया गया पुत्र दत्त और आत्रेय के संयोग से दत्तात्रेय नाम आरूढ़ हुआ। दत्तात्रेय सदैव ज्ञान के दाता होने पर इन्हें गुरुदेव और सद्गुरु भी पुकारा जाता है।

भगवान दत्तात्रेय लोक कल्याण की भावना से पूरित भक्तों पर निस्पृह कृपा निधान हुए। इन्हीं के हस्तवर्ध से भगवान परशुराम यशस्वी और तेजस्वी हुए। अलर्क प्रभृति, राजा पुरुरवा, हैहय वंशीय राजा कार्तवीर्य सहस्रार्जुन, भगवान शंकराचार्य, गोरक्षनाथ, महाप्रभु, सिद्ध नागार्जुन आदि अनेक सिद्धों और सन्तों को भगवान दत्तात्रेय के अनुग्रह से योग तथा मोक्ष की सिद्धियां प्राप्त हुईं। भगवान दत्तात्रेय को परशुराम का गुरु भी माना जाता है। गुरु-शिष्य के मन्दिर एक ही

भूखण्ड में होना पौराणिक तथ्यों को भी परिपुष्ट करता है। भगवान परशुराम का मन्दिर कुल्लू जनपद के निरमण्ड नामक स्थान पर बना है। लोकश्रुति है कि परशुराम ने मातृदोष से उन्मत्त होने के लिए डंसा, शनेरी, लालसा और शिंगला में एक-एक ठाहरी तथा काव, ममेल, नीरथ, दत्तनगर और निरमण्ड में देवालयों की स्थापना करवाई। यह भी जनश्रुति है कि भगवान परशुराम ने इस श्रृंखला में उत्तर भारत के अनेक स्थान पर मन्दिरों का निर्माण करवाया। लोक मान्यता है कि गुरु स्मृति को अमर बनाने के लिए भगवान परशुराम ने द्वापर युग में अपने गुरु दत्तात्रेय स्वामी का मन्दिर दत्तनगर में बनवाया।

यह मन्दिर जीर्णशीर्ष अवस्था में है। इस मन्दिर में द्विकाल पूजा की पुरातन परम्परा का प्रचलन रहा है। यहां दत्तात्रेय जयन्ती, दीपावली, नवरात्रों तथा ऋषि पर्वों को मनाने का रिवाज रहा है। यहां वर्षभर साधु-सन्तों की आवाजाही रहती थी जिन्हें मन्दिर की ओर से आवासीय तथा निःशुल्क भोजन की सुविधाएं दी जाती थी। इस मन्दिर में आय के अपर्याप्त साधन होने की स्थिति में अब इन रीतियों के निर्वहन में ठहराव सा आ गया है। सन् 1957 ई० से इस मन्दिर की व्यवस्था एक प्रबन्ध समिति द्वारा चलाई जा रही थी। सन् 2013 ई. को यह मन्दिर हिमाचल प्रदेश सरकार ने हिमाचल प्रदेश हिन्दू सार्वजनिक धार्मिक संस्थान एवं पूर्ण विन्यास अधिनियम 1984 के अधीन पुनः अधिगृहीत किया गया है। यह मन्दिर रामपुर से 12 किलोमीटर तथा शिमला से 118 किलोमीटर की दूरी पर है।

## **श्री दुर्गा मन्दिर, शराई कोटी, रामपुर**

सभी कुंए बर्फ और वर्षा के पानी से भरे रहते हैं। इनके लिए अन्य कोई जल स्रोत देवयोग माना जाता है जिससे किसी भी प्रकार का रोग-दोष नहीं होता है। यह लोक मान्यता है कि सूखा पड़ने की स्थिति में कुओं की सफाई करने से वर्षा रामपुर उपमण्डल की नयनाभिराम पर्वत चोटी शराई कोटी भूमध्य रेखा

से 30 उत्तरी अक्षांश तथा 77°26' पूर्वी रेखांश के मध्य समुद्रतल से 3000 मीटर ऊंचाई पर स्थित है। यहां से चारों ओर नैसर्गिक सौन्दर्य के रोमांचक दृश्य देख मिलते हैं जिससे मन में कौतुहल सा जाग उठता है। इस चोटी पर भगवती शरा कोटी का पहाड़ी वास्तु शिल्प में बना मन्दिर गहरी लोक आस्था का परिचायक है।

कालान्तर में इस चोटी पर शराई कोटी दुर्गा के एक प्राचीन देवालय में मूलतः महिषासुरमर्दिनी की चारभुजी प्रस्तर प्रतिमा स्थापित थी। सन् 1983 ई. को इस पुरातन मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाया गया। इस पुनर्निर्माण प्रक्रिया के साथ-साथ मन्दिर का आकार भी बड़ा किया गया। सम्भवतः इसी अवधि में मुख्य मूर्ति के साथ अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियां भी स्थापित की गई हैं। इस मन्दिर में कुल सात मूर्तियां हैं जिसमें शिव-पार्वती, महालक्ष्मी की मूर्तियां विशिष्ट पहचान रखती हैं। इस मन्दिर की पूजा में ही बाईं ओर एक त्रिशूल है।

शराई कोटी मन्दिर परिसर में मुख्य मन्दिर के बाहरी भाग पर बृहद् शिला पर चतर्भुजी लक्ष्मीनारायण की मूर्ति तराशी गई है। इस मूर्ति को स्थानीय बोली में माई-जई कहा जाता है। इस मन्दिर के ईर्द गिर्द देव तत्व के बोधक छह कुंए हैं। यह सभी कुंए विशाल चट्टानों की कोख में बने हैं। चट्टानी सतहों को काट कर बनाए गए इन कुंओं को कसो देवता, बसारा देवता, दुर्गा शराई कोटी, देवता किलबालू कूहल, देवता देवठी तथा बेशुट कुंआ के नाम से जाना जाता है। यह

..

नहीं है। यही कुंए शराई कोटी मन्दिर आने वाले श्रद्धालुओं को पोषित करते हैं। इन कुंओं में ठहरे जल को देव्य अमृत माना जाता है। इस संगृहीत जल का सेवन देवयोग माना जाता है जिससे किसी भी प्रकार का रोग-दोष नहीं होता है। यह लोक मान्यता है कि सूखा पड़ने की स्थिति में कुंओं की सफाई करने से वर्षा

अवश्यम्भावी होती है।

जनश्रुति है कि शराई कोटी में दुर्गा की स्थापना लगभग चार सौ वर्ष पूर्व हुई है। कर्णश्रुति है कि शराई कोटी दुर्गा मूलतः काओबिल नामक स्थान की वासिनि है। शराई कोटी में दुर्गा का उद्भव किन्हीं विकट परिस्थितियों में हुआ है। दन्त कथा है कि यहां के स्थानीय गांव देवठी के एक ब्राह्मण की पत्नी को देवी ने दर्शन देकर चेताया कि इस जनपद को भविष्य में भीष्म विपदाएं घेर डालेगी जिसे जान और माल की भारी क्षति हो सकती है। देवठी और शराई कोटी में अगर बेशुटों ने मूर्ति भालू के बेरहम पंजों से छुड़ाकर पुनः शराई कोटी मन्दिर में स्थापित करवा दी। यही कारण है कि बेशुटों की इस कर्मनिष्ठा पर दुर्गा ने शराई अनुष्ठान करवाए जाए तो भावी संकट से बचा जा सकता है। उस ब्राह्मण स्त्री की बात सुनकर ग्रामवासी स्तब्ध हो गए तथा प्राण रक्षा के उपायों को खोजते हुए यज्ञ के कार्य में जुट गए। यहां स्थानीय जनता ने पहला अनुष्ठान देवठी में करवाया तथा उसके पश्चाद शराई कोटी में यज्ञ करवाया। शराई कोटी में यज्ञ करवाने से इस चोटी पर दुर्गा का प्रादुर्भाव हुआ माना जाता है। शराई कोटी में दुर्गा की विधिवत स्थापना करवाई गई तभी से ग्रामवासी शराई कोटी दुर्गा की अराध्य देवी के रूप में पूजा करने लगे। लोकमानस में शराई कोटी दुर्गा की सहोदरा काओबिल में विद्यमान मानी जाती है। यहां यह प्रबल धारणा है कि काओबिल की दुर्गा का रहस्यमयी ढंग से शराई कोटी में आविर्भाव हुआ है।

शराई कोटी मन्दिर में महिषासुरमर्दिनी की खण्डित प्रतिमा पर घी चढ़ाने और देवी का स्तवन घी के साथ करने की पुरातन परिपाटी रही है। किंवदन्ति है कि एक बार जंगली भालू प्रतिमा पर लगे घी का स्वाद चखते हुए उसे मन्दिर से उठाकर ले गया। इस घटना के घटित होने पर शराई कोटी के जंगल से चीख-पुकार जैसी भयवहता आवाजें उठने लगी। यहां ग्रामवासियों को वेदना से पूरित ध्वनि में यह भी सुनाई दे रहा था कि- "बेशुटों मुझे बचाओ मैं विपदा में घिर गई हूं।" इस आवाज को सुनकर बेशुट भ्राता शराई कोटी जंगल की ओर सशस्त्र गए। इन्हें इसी अरण्य में एक भालू दिखाई दिया जो प्रस्तर मूर्ति को लोटपोट कर चाट रहा था। इस तरह मूर्ति भालू द्वारा बार-बार धकेलने और उठाने से खण्डित होती जा रही थी।

बेशुटों ने मूर्ति भालू के बेरहम पंजों से छुड़ाकर पुनः शराई कोटी मन्दिर में स्थापित करवा दी। यही कारण है कि बेशुटों की इस कर्मनिष्ठा पर दुर्गा ने शराई

कोटी ने एक जल का कुंआ बेशुट खानदान के नाम पर बृहद् चट्टान को कटवा कर तैयार करवाया। इस परिवार के लोग कूहल गांव के रहने वाले हैं। शराई कोटी दुर्गा का मान्यता क्षेत्र व्यापक है। यह देवी पुत्र रत्न देने वाली दुर्गा के नाम से विख्यात है। यहां प्रतिवर्ष श्रद्धालु पुत्र प्राप्ति की इच्छा से आते हैं और मनवांछित मनोकामना पूर्ण होने पर वह मन्दिर में वापस नतमस्तक होने आते हैं। ऐसे पुत्रों का मुण्डन संस्कार और शिखा संस्कार भी इसी मन्दिर परिसर में करवाया जाता है। यहां दुर्गा दर्शन का अनोखा विधान प्रचलित है। एक परम्परा के अनुसार इस मन्दिर में दम्पति एक साथ प्रवेश नहीं कर सकते हैं। यहां देवी के ब्रह्मचारिणी स्वरूप की पूजा-अर्चना की जाती है। इस प्रकार यहां पति-पत्नी देवी का आशीर्वाद एक साथ नहीं ले सकते हैं। यद्यपि कोई दम्पति मर्यादाओं का उल्लंघन करता है तो उसे अनिष्टकारक परिणाम सहने पड़ते हैं।

शराई कोटी दुर्गा का प्रतीक चिन्ह कलशनुमा एक देव पात्र है जिसे स्थानीय बोली में 'क्रो' कहते हैं। यह 'क्रो' रियासतीकाल में देवी भक्त रामपुर तक जातर में ले जाते थे। वर्तमान में 'क्रो' शराई कोटी दुर्गा अधिष्ठित क्षेत्र तक ही परिक्रमा पर लाया जाता है। देव्य वाणगी देवठी देवता का गूर ही प्रस्तुत करता है। गूर देवी की खेल आने पर लोगों के प्रश्नों का उत्तर देता है। शराई कोटी में देवी पूजा का नित्य नियम नहीं है। यहां हर संक्रान्ति को पूजा की जाती है। यहां देवी को मद्य चढ़ाने का पुरातन परिपाटी है। इस मन्दिर में वसन्तीय तथा शारदीय नवरात्रों में देवी की पूजा धूमधाम के साथ की जाती है। शराई कोटी देवी का एक अन्य मन्दिर कूहल गांव में भी है। जहां ग्रामवासी देवी की पूजा स्वयं करते हैं।

शराई कोटी मन्दिर हिन्दुस्तान-तिब्बत राष्ट्रीय उच्चमार्ग पर पड़ने वाले नोगली नामक स्थान से 45 किलोमीटर की दूरी पर है। इस मन्दिर तक दो अलग-अलग मार्गों से पहुंचा जा सकता है।

रामपुर-नोगली-तकलोच-देवठी-दारन घाटी तक है जबकि दूसरा मार्ग

रामपुर-गोपालपुर-मशनू-दारन घाटी से होकर है। दारन से मन्दिर तक केवल दो किलोमीटर पैदल मार्ग है। यहां रात्रि ठहराव के लिए एक विश्राम गृह तथा सराय है। यह मन्दिर रामपुर से 65 किलोमीटर तथा शिमला से 174 किलोमीटर की दूरी पर है।